ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

अंतिम एवं नवम् दशक के महिला साहित्यकार और चित्रा मुदगल

डॉ. विद्या खाडे दलवे

प्रस्तावना :

आधुनिक युग मे समय के साथ सामाजिक समस्या और मानवी मूल्यों तेजी की प्रक्रिया चल रही है। इस दृष्टिकोन से बदलते हुए जीवन संदर्भ मे नारी की बदलती हुई मानसिकता को लेकर आठवें दशक मे अनेक महिला लेखिका आणि के बहुआयामी व्यक्तित्व की पहचान अपने अपने वास्तविकता को समाजकार व्यक्तीवर समाज के अत्याचारो का सामना पूरी शक्ती से करने के योगी अपने को बना रही है । नारी का व्यक्तित्व देह , व्यापार से नही बनता की पालखी पुरुषो की तरह उसकी अपनी भी सत्ता हैं ।

वैज्ञानिक युग मे प्रगती के कारण समाज मे अमुलाग्र परिवर्तन आया है और इस प्रगति के कारण पुराने मूल्य टुटने लगे है और नए मूल्य की प्रतिष्ठापना हो रही है। इस काम में पुरुष भी नारी की शक्ती पहचान कर उसका सहयोग देंगे तो भविष्य मे एक नया स्वस्थ परिवार देखने को मिलेगा। नारी कहीं भी पहुँच जाएँ पुरुष का साथ उसके लिए आवश्यक है अनमेल विवाह की सभी लेखिकाओं ने आलोचना की है। पुनर्विवाह का भी समर्थन किया है । तलाक की बढती समस्या पर भी चिंता व्यक्त की है। समाज की विधाओं पर भी उपन्यासकारों की नजर गई है । वेश्या जीवन, वेश्या पुत्री के जीवन की विसंगतियों पर भी उन्होने दृष्टिपात किया है।

हिंदी साहित्य जगत में सन 1980 के बाद नारी लेखन पर विभिन्न लेखिकाओं ने अपनी कलम को लेकर अपनी जुबानी नारी स्वाभिमान की , उसके दर्द की, उसकी आशा आकांक्षा की, हार जीत की, सुख और दुःख की कहानी कही । नवम् एवं अंतिम दशक के महिला साहित्यकारों ने नारी जीवन के उन समस्त पहलूओं को उजागर करने का प्रयास किया। जहाँ जहाँ नारी का शोषण हुआ उसका अंकन हिंदी कथा साहित्य मे नारी लेखिकाओं के माध्यम से हुआ है। जिसमें नारी ने अपने परंपरागत रूप से हटकर विद्रोही भूमिका निभाई है और अपने अस्तित्व के प्रति जागृत हुई है।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

आज अपनी आजादी की तड़प और छटपटाहट को अस्तित्व से जोडकर उसने परंपरागत नारी के कवच को त्याग कर मुक्ति के द्वार पर दस्तक दी है। यहाँ तक पहुँचने का प्रयास करने वाली लेखिकाओं में - कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, उषा प्रियंवदा , शिवानी, सूर्यबाला, सुनीता जैन, राजी सेठ, प्रभा खेतान, अलका सरावगी, चित्रा मुदगल, मधु कांकरिया आदि लेखिकाओं ने नारी जागृति को रेखांकित किया है।

नवं अंतिम दशके महिला उपन्यासकारों द्वारा जो उपन्यास

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

लिखे गयें है वह हिंदी उपन्यास की बडी उपलब्धि माननी पडेगी। १ सूर्य बाला का 'यामिनी कथा', 'दीक्षांत ' २ चंद्रकांता के ' अर्थांतर ', ' अंतिम साक्ष्य ' ,' बाकी सब खैरीयत ' , ऐलान गली जिंदा है' , 'अपने- अपने कोणार्क में कुत्री का जीवन चित्रण किया है। पढी- लिखी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी फिर भी पारिवारिक मर्यादाओं से बँधी होने से एकाकीपन अनुभव करतीं हैं। ३. राजी सेठ नवें दशक की उल्लेखनीय उपन्यास लेखिका हैं। उनका ' तत्सम '(१९८३) आधुनिक नारी के पुर्न - विवाह की समस्या को संवेदनात्मक स्तर पर प्रस्तुत किया है। नासिरा शर्मा प्रगतिशील विचारों की लेखिका हैं। मनुष्य का धर्म, संप्रदाय या विचारधारा से ऊपर मानती है। उनके उपन्यास ' सात नदियाँ एक समुन्दर ' , ' ठिकरें की मँगनी ' , ' जिंदा मुहावरे ' , ' शाल्मली ' में हिन्दू परिवार तो ठिकरें की मँगनी में मुस्लिम परिवार में आधुनिक भारतीय नारी की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। मैत्रेयी पुष्पा का स्मृतिदंश, बेतवा बहती रहीं, मार्मिक उपन्यास है। दोनों भी उपन्यासों में पुरूष समाज द्वारा नारी पर होने वाले अत्याचार का अंकन है। उनकी 'अल्मा कबूतरी ' एक सशक्त रचना है। जनजातियाँ जो आज स्वतंत्रता का अर्थ नहीं जानती। बुंदेलखंड में बसने वाली ' कबूतरा ' जाति का जीवन इसमें साकार हुआ है। " 2

नवम् एवं अंतिम दशक के महिला साहित्यकारों में चित्रा मुद्गल आधुनिक कथा- साहित्य की बहुचर्चित लेखिका हैं। उन्होंने अपने अनुभवों को समाज के विभिन्न समुदायों विशेषकर दलित शोषितों के बीच रहकर विकास है।

सन् १९९० मी प्रकाशित चित्रा मुदगल का पहला उपन्यास ''एक जमीन अपनी'' हिंदी उपन्यास जगत में एक ऐसा प्रयास है, जो आधुनिक विज्ञापन जगत् की प्रतियोगिता और प्रकाश भरी विसंगतियों में जीने वाली नारी की खामोंशी को उत्तराधुनिक नारी समाज के विडंबना के साथ जोड दिया है। जिसमे चित्रा मुदगल जी ने कामकाजी महिलाओं की आशा आकांक्षाओं को उनकी कठीनाईयों के साथ प्रस्तुत किया है। मुंबई महानगरीय परिवेश में विज्ञापन जगत का ग्लैमर, मूल्यहीन प्रतियोगिता, देह व्यापार के बीच ' नारी विमर्श ' है। 'आवां ' उपन्यास में एक नौजवान लड़की नमिता पांडे के जीवन संघर्ष का केंद्रीय विषय है।

आवां उपन्यास उपन्यास की नायिका इसी द्वंद में उलझी रहतीं है। " आवां अपनी एक तरफ गहरी संवेदनात्मक पकड़ और भेदी पडताल के अंतर व्याप्त रचना कौशल जिन बिंदुओं पर हमें आत्मालोचन के कठघरे में ले जाती है और जिस विवेक की माँग करतीं हैं, उसीकों चुनौती देता यह उपन्यास है। " 3

चित्रा मुदगल चौदह कहानी संग्रह, पाँच उपन्यास प्रकाशित हैं। समकालीन जीवन के सभी सम-विषम पक्ष उनकी रचनाओं में समाविष्ट है। उनके सृजन में मानव की पीड़ा, दुख और कष्ट के स्वर मुखर है। जीवन दायिनी मूल्यों के प्रति उनके हृदय में अपार संवेदना है। वैयक्तिक जीवन से लेकर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक भूमिकाओं में अभिव्यक्त उनका विद्रोह और उनकी निर्भिक स्पष्टवादिता उनके नवीन भाव - बोध और अदम्य साहस की परिचायक है। " भारतीय संस्कृति के व्यापक जीवन दर्शन से अनुप्रणित उनकी वैचारिक मान्यताएँ सामाजिक, आर्थिक , राजनैतिक सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्यावहारिक मान्यताओं के परंपरागत मूल्यों में सामंजस्य स्थापित कर नूतन जीवन दर्शन और

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

युगबोध को प्रस्तुत करतीं हैं। ” 4 चित्रा मुदगल को जिन महिला रचनाकारों ने प्रभावित किया है उनमें कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, सूर्य बाला, उषा प्रियंवदा, शशी प्रभा शास्त्री आदि।

नवम् एवं अंतिम दशक में महिला उपन्यासकारों उपन्यास लिखे हैं उसमें जीवन के दस्तावेज, परिवर्तन शील जीवन, विषय विविधता और गुणात्मक दृष्टि दिखाई देती है।

निष्कर्ष :

आधुनिक युग में समय के साथ सामाजिक समस्याएँ और मानवीय मूल्यों में तेजी की प्रक्रिया चल रही है। इस दृष्टि कोन से बदलते हुए जीवन में नारी की बदलती मानसिकता को लेकर , वास्तविकता को समझकर समाज के अत्याचारों का सामना किया है।

बीसवीं सदी के नवम् एवं अंतिम दशक में स्त्री साहित्यकारों ने जो उपन्यास कहानियाँ लिखी है उसमें उन्होंने अपनी कृतियों में वर्तमान समय को पूर्ण रूप से चित्रित किया है। अंतिम दशक की अनेक रचनाएँ ऐसी है जिनमें परिवर्तनशील जीवन का चित्रण देखने को मिलता है।

संदर्भ:

1) बीसवीं सदी के अंत में उपन्यास- डॉ . प्रकाश मनु, पृ. 144-145
2) चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में युग चिंतन- डॉ. पितांबर सरोदे, चर्चा सत्र वही,
3) शब्द शिखर संयुक्तांक-2 जुलाई 2002 पृ, 51-53
4) आजकल पत्रिका , पृ, 15-16

Cite This Article:

डॉ. खाडे दलवे व. (2024). *अंतिम एवं नवम् दशक के महिला साहित्यकार और चित्रा मुदगल*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 108–110)

EIIRJ. https://doi.org/10.5281/zenodo.10648642